International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 813-814

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 813-814
www.allresearchjournal.com
Received: 14-08-2015
Accepted: 17-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

अपभ्रंश साहित्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य का आरम्भिक विकास अपभ्रंश साहित्य के साथ ही हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के अन्तर्गत जैनों, नाथों, सिद्धों, का अपभ्रंश साहित्य में महत्व पूर्ण योगदान रहा है। अपभ्रंश साहित्य के माध्यम से सबसे पहले सामान्य व्यक्ति एवं रचनाकार का परस्पर साक्षात्कार हुआ। अपभ्रंश के कवियों ने अपने धर्म एवं दर्शन के माध्यम से अपभ्रंश भाषा के द्वारा अपने उपदेश अथवा साधारण साहित्य जनसाधारण तक पहुंचाने का प्रथम साहित्यिक प्रयास किया। हिन्दी साहित्य का वास्तविक उद्भव एवं विकास की कहानी यहीं से ही प्रारम्भ होती है।इस लिए हिन्दी एवं अपभ्रंश साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रारम्भिक साहित्य होने के कारण स्वाभाविक ही है इस साहित्य का प्रभाव पर वर्ती साहित्य पर अक्षुण्ण एवं दूरगाामी अवश्य हुआा इस में सन्देह नहीं।अपभ्रंश साहित्य से हिन्दी साहित्य शिल्प एवं अनुभूति दोनों ही दृष्टियों से प्रभावित रहा। [1]

प्रसिद्ध आलोचक एवं इतिहास लेखक डॉ रामकुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक ,हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास में अपभ्रंश साहित्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है–

सन्धि–काल हमारे साहित्य के इतिहास में ऐसा पुण्य पर्व समझा जाना चाहिए जिसमें शताब्दियों की धार्मिक, दार्शनिक, और सांस्कृतिक परम्पराएं हमारी भाषा में अवतरित हुईं, और उनके द्वारा जैन मत के विकास का पूर्ण इतिहास हमें प्राप्त होता हुआ, संसार व्यापी धर्मों का अपने समस्त चिन्तन और अनुशीलन पक्ष से जनभाषा में रूपान्तरित होना हमारे साहित्य के लिए गौरव का विषय है। यह दूसरी बात है कि हमारी भाषा इतनी स्मृद्ध शालिनी न रही हो, जिसमें इतने उदात्त विचारों की अभिव्यक्ति सफलता पूर्वक हो सके। उस समय भाषा विकास के पथ पर अग्रसर हो रही थी। [2]

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में एक साथ अनेक काव्य धाराएं चल रही थीं उस समय एक तरफ रासो काव्य या ग्रंथ लिखे जा रहे थे तो दूसरी ओर जैन कवियों द्वारा साहित्य रचना हो रही थी, साथ ही साथ सिद्ध कवि भी अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर रहे थे। इसके साथ–साथ नाथ साहित्य और लौकिक साहित्य भी पीछे नहीं था, सभी अपनी अपनी बाह्य धाराओं के माध्यम से साहित्य एवं समाज को उन्नत करने में लगे हुए थे।

अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव– इसमें सन्देह नहीं कि अपभ्रंश साहित्य ने परवर्ती हिन्दी साहित्य को अवश्य प्रभावित किया है। इस साहित्य का सर्वाधिक प्रभाव भक्ति एवं रीति काव्य पर पडा। इसके अतिरिक्त चारण काव्य को भी अपभ्रंश साहित्य नें प्रभावित किया है।

अपभ्रंश साहित्य का चारण काव्य पर प्रभाव

हिन्दी साहित्य में चारण काव्य का बहुत अधिक महत्व है। रासो ग्रन्थों पर अपभ्रंश के चरित काव्यों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पडता है क्योंकि, इन काव्यों की मूल प्रवृत्ति एक जैसी ही है। दोनों ही काव्यों में राजाओं के धन, वैभव, पराक्रम, और बहु विवाहों का वर्णन दोनों ही काव्यों में समान रूप से मिलता है। रासो ग्रन्थों में वीर एवं श्रृंगार रस का मिश्रण है हिन्दी साहित्य के चरित काव्यों में वीर और श्रृंगार के साथ साथ काव्य में शांत रस भी मिलता है। इन दोनों के साम्य के विषय में डॉ गणपति चन्द्र गुप्त ने बडी सटीक टिप्पणी की है–

जैन कवियों द्वारा प्रवर्तित धार्मिक रास काव्य परम्परा ही आगे चलकर ऐतिहासिक रासो काव्य परम्परा के रू॰ में परिवर्तित हुई।यह सत्य है किस आदि काल के रासो ग्रन्थ जैन कवियों के चरित काव्यों से बहुत प्रभावित हैं किन्तु इससे यह समझना कि हिन्दी के रासो ग्रंथों में अपभ्रंश के चरित काव्यों की रूढियों और परम्पराओं का ही पालन मात्र या अन्धानुकरण हुआ है, भ्रम होगा। [3]

डॉ नगेन्द्र भी इसी मत के हैं, वे लिखते हैं कि इस प्रकार स्पष्ट होता हे कि जैन रास काव्य का वीरगाथात्मक रासो ग्रन्थों पर कुछ प्रभाव अवश्य पडा है, परन्तु अन्धानुकरण नहीं किया गया है। [4]

अपभ्रंश साहित्य के विरह काव्य और गीतों ने भी हिन्दी के आदिकाल के रासो ग्रन्थों को बहुत

प्रभावित किया है। अपभ्रंश के संदेश रासक और हिन्दी साहित्य के बीसलदेव रासो में पर्याप्त साम्य है। इसके अतिरिक्त अपभ्रंश के उपदेशरसायन रासो का भी बीसलदेव रासो पर पर्याप्त प्रभाव परिलक्षित होता है। पृथ्वी राजरासो तथा सन्देशरासक के प्रारम्भिक पद्यों में बहुत कुछ समानता है।

डॉ शिवकुमार शर्मा का भी यही मत है– रासों काव्यों में तथा चरित काव्यों में उद्धृत शब्द योजना, समस्त पदावली और भाषा की गति की इतनी समानता है कि दोनों भाषाओं के महाकाव्यों में भाषा की एकता का भ्रम हो जाता है।

भक्ति काव्य पर अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव

भक्तिकाल का साहित्य हिन्दी साहित्य का मुकुट मणि है। सन्त–काव्यधारा पर अपभ्रंश साहित्य के सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य का पूर्णरूपेण प्रभाव दृष्टिगत होता है। सन्तों ने पाखण्ड, बाह्याडम्बरों तथा कर्मकाण्ड आदि का डट कर विरोध किया था तथा सन्ध्या भाषा, उलटवासियों, रहस्यमयी उक्तियों, रूपकमयी रचनाओं आदि का निरूपण किया, यह सब सिद्ध साहित्य का ही प्रभाव है। यहां तक कि सूरदास के दृष्टिकूट पदों में भी अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है। सिद्धों और जैनों ने दोहा, गीत, तथा चौपाई आदि के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए थे। कबीर, तुलसी, सूर एव विद्यापति आदि ने दोहा तथा गीत पद्धति को अपनाया तथा जायसी और तुलसी ने दोहा और चौपाई छन्द में काव्य रचना की। सूफियों के काव्य में लौकिकता और आध्यात्मिकता का जो स्वरूप दिखाई देता है वह अपभ्रंश साहित्य का ही प्रभाव है। [6]

पदमावत में विरह वर्णन जायसी ने अपभ्रंश साहित्य की अद्भुत रचना संदेश रासक से ग्रहण किया। वैसे भी अपभ्रंश साहित्य ने भक्ति कालीन सम्पूर्ण साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया इसमें सन्देह नहीं। इस सन्दर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार विशेषतः उद्धृत करने वाले हैं, उन्होंने हिन्दी साहित्य की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि–यदि कबीर आदि निर्गुण वादी सन्तों की वाणियों की बाहरी रूपरेखा पर विचार किया जाए तो मालूम होगा कि यह सम्पूर्णतः भारतीय है और बौद्ध धर्म के अन्तिम सिद्धों और नाथपंथी योगियों के पदादि से उसका सीधा सम्बन्ध है। पद, रागरागनियां, दोहे चौपाइयां सभी कबीर आदि सन्तों ने अपनाईं हैं। छन्द, पारिभाषिक शब्द आदि का भी अनुकरण उन्होंने किया है। कबीर और सूरदास ने दृष्टिकूटों और उलटवांसियों का खूब प्रयोग किया है जो निस्सन्देह नाथपंथियों एवं योगियों की ही देन है जिसका प्रभाव कबीर आदि में दिखाई देता है। [7]

डॉ नगेन्द्र ने अपभ्रंश साहित्य के महत्व कोसमझते हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं–अगर आदि कालीन सिद्धों और नाथपंथियों के काव्य रूपों को हिन्दी क्षेत्र से निकाल दिया जाए तो फिर भक्ति कालीन निर्गुण पंथियों की काव्य गंगा का उद्गम बताना कठिन हो जाएगा। [8]

रीति काल पर अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव– अपभ्रंश के प्रभाव से परवर्ती साहित्य अप्रभावित रहा हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। रीति काल को ही देखें तो स्पष्ट दिखाई देता है कि रीति काल की प्रमुख प्रवृत्ति आश्रयदाताओं की प्रशंसा एवं अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से यशोगान करना अपभ्रंश साहित्य की देन है। श्रृंगारिकता, नखशिखवर्णन, अलंकारिकता नायिका भेद षड्ऋतु वर्णन, कवित्त, सवैया, दोहा आदि के प्रयोग में भी अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव परिलक्षित होता है।

डॉ कोछड के अनुसार हिन्दी का मध्ययुगीन साहित्य संस्कृत साहित्य से अधिक प्रभावित हुआ है। परन्तु यह भी सत्य है कि इन दोनों साहित्य पर अपभ्रंश साहित्य का भी पर्याप्त प्रभाव पडा है। डॉ नगेन्द्र ने इस तथ्य को और उजागर करते हुए लिखा है–प्राकृत और अपभ्रंश से राउलवेल तथा श्रृंगार की जो परम्परा आई थी, वह भक्तिकाल को प्रभावित करती हुई रीति काल तक चली गई। नारी के सहज श्रृंगार से लेकर उसके मानसिक सौंदर्य तक पहुंचने की प्रवृति भी आदिकाल में पूर्ण वेग से उभरी। नखशिख वर्णन विरह के विभिन्न रूप, विरहिणी नायिका द्वारा प्रियतम के पास सन्देश–प्रेषण, स्वकीय और परकीया के प्रेम की सीमाएं–ये सब आदि कालीन साहित्य के कथ्य में अन्तर्निहित हैतथा उनके कारण अनेक काव्य रूपों एवं आलंकारिक वर्णनों की परम्परा का विकास हुआ है।

अपभ्रंश के अन्य काव्य रूपों का हिन्दीसाहित्य पर प्रभाव

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि वस्तुतः छन्द,काव्यगत रूप,वक्तव्य–वस्तु, कविरूढियों और परम्पराओं की दृष्टि से यह साहित्य अपभ्रंश साहित्य का बढावा हैं। डॉ नगेन्द्र ने भी इसी प्रकार के भाव व्यक्त किए हैं– भावधारा के विषय में अपभ्रंश से हिन्दी का जहां केवल ऐतिहासिक सम्बन्ध है वहांकाव्य रूपों और छन्दों के क्षेत्र में उस पर अपभ्रंश की गहरी छाप है। [9]

क– छन्दों का प्रभाव– हिन्दी साहित्य में लगभग सभी छन्दों का प्रयोग अपभ्रंश साहित्य के प्रभाव के कारण ही सम्भव हो सका। अधिकांश उन्हीं छन्दो को अपनाया गया तथा बाद में अन्य नए छन्द भी प्रकाश में आए।

ख– काव्य रूपों पर प्रभाव– अपभ्रंश साहित्य अधिकतर पद्यमय है संदेशरासक में रासक छन्द मुख्य रूप से प्रयुक्त हुआ है। हिन्दी के चारण काल अर्थात् आदिकाल में इस परम्परा पर पृथ्वीराज रासो, बीसल देव रासो, खुमान रासो, परमालरासो आदि सुन्दर रचनाएं लिखीं गईं। इस अपभ्रंश कालीन गेय साहित्य का प्रभाव भक्ति काल के कबीर, तुलसी, सूर, मीरा आदि पर परिलक्षित होता है। [10]

ग– अपभ्रंशसाहित्य का अन्य काव्यपरम्पराओं पर प्रभाव– हिन्दी साहित्य पर अपभ्रंश साहित्य की काव्यगत रूढियों या परम्पराओं का प्रभाव पडा। अपभ्रंश साहित्य के प्रबन्ध काव्य की प्रवृत्तियों पर मंगलाचरण, आत्मनिवेदन, दुर्जन निन्दा, सज्जनप्रशंसा आदि का प्रभाव तुलसी दास में पर्याप्त मात्रा में दृष्टि गत होता है। मुक्तक काव्य में कवि नाम देने की प्रथा अपभ्रंश काल में प्रचलित थी। इस परम्परा का पालन भक्ति एवं रीति काल दोनों में दिखाई पडता है। अपभ्रंश साहित्य के आधार पर ही आगे के काव्यों में प्रतीकों का प्रयोग किया गया। [11]

इस तरह अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से हिन्दी के परवर्ती समग्र साहित्य में दिखाई देता है। यही कारण है कि अपभ्रंशसाहित्य को हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग माना गया है। परवर्ती हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियेां का सम्बन्ध मूल रूप से अपभ्रंश साहित्य से सम्पृक्त है।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 174
2. डॉ रामकुमार हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ 67
3. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ 79
4. डॉ नगेन्द्र इतिहास सम्पादन पृ 56
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ 46
6. उपरोक्त पृ 54
7. उपरोक्त पृ 86
8. डॉ नगेन्द्र इतिहांस सम्पादन पृ 65
9. उपरोक्त पृ 34
10. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 89
11. 11 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ78